8. 'साहित्यकार के लिए स्रष्टा और द्रष्टा होना अत्यंत अनिवार्य है–क्यों और कैसे?
9. 'कवि-पुरोहित' के रूप में साहित्यकार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
10. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
    (क) 'कवि की यह सृष्टि निराधार नहीं होती। हम उसमें अपनी ज्यों की त्यों आकृति भले ही न देखें पर ऐसी आकृति ज़रूर देखते हैं जैसी हमें प्रिय है, जैसी आकृति हम बनाना चाहते हैं।'
    (ख) 'प्रजापति-कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, ऐसा यथार्थवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर हैं और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं।'
    (ग) 'इसके सामने निरुद्देश्य कला, विकृति काम-वासनाएँ, अहंकार और व्यक्तिवाद, निराशा और पराजय के 'सिद्धांत' वैसे ही नहीं ठहरते जैसे सूर्य के सामने अंधकार।'

भाषा-शिल्प

1. पाठ में प्रतिबिंब-प्रतिबिंबित जैसे शब्दों पर ध्यान दीजिए। इस तरह के दस शब्दों की सूची बनाइए।
2. पाठ में 'साहित्य के स्वरूप' पर आए वाक्यों को छाँटकर लिखिए।
3. इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-
    (क) कवि की सृष्टि निराधार नहीं होती।
    (ख) कवि गंभीर यथार्थवादी होता है।
    (ग) धिक्कार है उन्हें जो तीलियाँ तोड़ने के बदले उन्हें मजबूत कर रहे हैं।

योग्यता-विस्तार

1. 'साहित्य और समाज' पर चर्चा कीजिए।
2. 'साहित्य मात्र समाज का दर्पण नहीं है' विषय पर कक्षा में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

नकल-नवीस	–	नकल करने वाले
पार्श्व	–	बगल, बाजू
क्षुब्ध	–	खिन्न, क्षोभयुक्त, अशांत
जीर्ण	–	पुराना, जर्जर
पांचजन्य	–	श्रीकृष्ण के शंख का नाम
दृढ़व्रत	–	दृढ़प्रतिज्ञ
विश्रांति	–	आराम
रुद्धस्वर	–	रुकी हुई आवाज़
सींकचा	–	बंधन, कैद
सुघर	–	सुघड़, सुंदर
पंख कतरना	–	नियंत्रित करना

© NCERT not to be republished